4

यीशु ने बपतिस्मा लिया

''उन दिनों में यीशु ने गलील के नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। और जब वह पानी से निकलकर ऊपर आया, तो तुरन्त उस ने आकाश को खुलते और आत्मा को कबूतर की नाईं अपने ऊपर आते देखा। और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूं'' (मरकुस 1:9-11)।

यीशु ने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया हुआ था (प्रेरितों 1:21, 22)। इस बपतिस्मे की तुलना उस बपतिस्मे से नहीं करनी चाहिए जिसे यीशु ने स्वर्गारोहण के बाद अपने चेलों को देने के लिए कहा था। इस दूसरे बपतिस्मे को ''यीशु का बपतिस्मा'' या ''नई वाचा का बपतिस्मा'' कहा जाएगा।

यीशु के बपतिस्मे के विषय में कुछ लोगों का क्या कहना है

यूहन्ना द्वारा यीशु को दिए गए बपतिस्मे के विषय में एक धार्मिक संगठन ने लिखा है, ''इससे पृथ्वी पर अपने पिता द्वारा दिए गए विशेष कार्य के लिए उसका अपने आपको यहोवा के सामने प्रस्तुत करने का संकेत मिलेगा।''[1]

एक दूसरा विचार है कि ''हमें वैसे ही बपतिस्मा लेना चाहिए जैसे यीशु ने लिया था,'' और ''यीशु ने जो सही था वह करने अर्थात परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लिया था।''[2] यह विचार यीशु के बपतिस्मा लेने के उद्देश्य को *परमेश्वर की आज्ञाकारिता* के रूप में देखता है। बाद में वक्तव्य दिया जाता है कि यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा हमारे बपतिस्मे की तरह है; फिर इससे निष्कर्ष निकाला जाता है कि:

> यदि इसे स्थिर रहने की अनुमति हो और यह दिखाया जा सकता हो कि किसी ने उसी प्रेरणा से डुबकी ली थी, जिससे उद्धारकर्त्ता ने ली, चाहे वह व्यक्ति क्षमा की बात न भी जानता हो, तो भी, उसके बपतिस्मे को शास्त्र के अनुसार माना जाना चाहिए।[3]

यीशु द्वारा लिए गए बपतिस्मे को प्रमाणित करने के लिए ऐसे इस्तेमाल किया जाता है कि

किसी को बपतिस्मे के उद्देश्य के बारे में न भी बताया जाए तो कोई बात नहीं या वह अज्ञानता में बपतिस्मे के उद्देश्य से इन्कार करके भी यदि परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए बपतिस्मा ले रहा है तो बपतिस्मा लेने से उसे प्रतिज्ञा किए हुए लाभ मिल ही जाते हैं।

बपतिस्मा लेते समय यीशु के मन में इसके उद्देश्य के बारे में पूरी समझ थी। यदि वह हर बात में हमारा आदर्श है तो बपतिस्मा लेते समय हमें भी पूरी समझ होनी चाहिए। बपतिस्मा लेने का हमारा उद्देश्य यीशु के बपतिस्मा लेने के उद्देश्य से अलग है।

तीसरा विचार यह है कि बपतिस्मा लेते समय यीशु पापरहित था, इसलिए बपतिस्मा लेने वाले का पापरहित होना आवश्यक है। यदि ऐसा होता, तो उद्धार के लिए बपतिस्मे की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। ऐसा विचार रखने वाले लोगों को लगता है कि उद्धार पाने के लिए यदि बपतिस्मा आवश्यक है तो अकेले विश्वास की शिक्षा का खण्डन हो जाता है।

यीशु द्वारा बपतिस्मा लेने के ये तीनों विचार बपतिस्मे के लिए उसके समर्पण को एक खोखला संस्कार बना देते हैं। पहला दृष्टिकोण प्रस्तुत करने वालों को इस बात से सहमत होना पड़ेगा कि यीशु ने हमेशा परमेश्वर की इच्छा को माना और वह उसकी इच्छा पूरी करने के लिए ही आया था (यूहन्ना 6:38; इब्रानियों 10:7), इसलिए परमेश्वर की सेवा में अपने आपको सांकेतिक रूप में प्रस्तुत करने की उसे कोई आवश्यकता नहीं थी। पृथ्वी पर आकर पहले ही उसने अपने आपको परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण कर दिया था। उसका पृथ्वी पर आना परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए उसके समर्पण का पर्याप्त प्रमाण था। यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा लोगों की खातिर ही नहीं था, क्योंकि उसके बपतिस्मे के समय थोड़े ही लोग वहां उपस्थित थे। यदि उसका बपतिस्मा लोगों के लिए ही था तो उसका यह कार्य मात्र खोखला संस्कार था।

दूसरे दृष्टिकोण के बारे में यह प्रश्न पूछना चाहिए कि जब यीशु ने कोई पाप ही नहीं किया था जिसके लिए उसे क्षमा की आवश्यकता हो और वह खोया हुआ भी नहीं था, तो फिर उसका बपतिस्मा खोये हुए पापियों की क्षमा के लिए उदाहरण कैसे बन सकता है? बेशक उसका बपतिस्मा आज्ञाकारिता का एक अच्छा उदाहरण है, परन्तु एक पापी के पापों की क्षमा के उदाहरण के लिए कहीं और देखना चाहिए (प्रेरितों 2:38-41; 22:16)। इसके अलावा, क्षमा के लिए बपतिस्मा अकेला कुछ नहीं कर सकता।

यीशु का बपतिस्मा परमेश्वर की प्रत्येक धर्मी शर्त को पूरा करने का प्रयास था ताकि वह आज्ञाकारिता का एक सम्पूर्ण नमूना प्रस्तुत कर सके। दूसरी ओर, पापी के लिए बपतिस्मा परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध बनाने, परमेश्वर द्वारा क्षमा प्राप्त करने और त्रुटिपूर्ण चाल-चलन को सुधारने के लिए है।

यीशु और यूहन्ना का बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले लोग परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए आए, परन्तु उनके उद्देश्य बिल्कुल ही अलग-अलग थे। मेरा भाई ग्लैन अपने माता-पिता की आज्ञा मानने के लिए लकड़ी लाता था ताकि वे उसे चचेरे भाई के साथ छोटे ट्रक में बैठने दें, जबकि मैं लकड़ियां लाने की आज्ञा-अपने एक मित्र के साथ शिकार के लिए बाणतीर बनाने के लिए मानता था। दोनों काम आज्ञाकारिता के थे लेकिन

उद्देश्य अलग-अलग थे। ग्लैन हमारे माता-पिता की आज्ञा मानने के लिए लकड़ियां ले जाने में मेरा उदाहरण हो सकता था, परन्तु हम दोनों के उद्देश्य बिल्कुल ही अलग-अलग थे। उसी प्रकार यीशु द्वारा लिया बपतिस्मा आज्ञाकारिता के एक उदाहरण के रूप में हो सकता था परन्तु उसके लिए उन सभी उद्देश्यों का पालन करना आवश्यक नहीं था जो एक पापी मनुष्य को करने होंगे।

तीसरा दृष्टिकोण भी नई वाचा के बपतिस्मे को केवल एक खोखला संस्कार बना देता है। यदि मनुष्य के उद्धार के लिए बपतिस्मा परमेश्वर की शर्त नहीं है और इसका कोई आत्मिक महत्व नहीं है, तो यह एक व्यर्थ समारोह है। निश्चय ही परमेश्वर ने पानी में पूरे किए जाने वाले खोखले संस्कार के बाहरी अभ्यास से बपतिस्मे में आज्ञाकारिता के लिए अधिक अर्थ चाहा था।

यूहन्ना की सेवकाई में समझा जाने वाला यीशु का बपतिस्मा

यीशु द्वारा लिए जाने वाले बपतिस्मे को यूहन्ना की सेवकाई के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। इस संदर्भ के बाहर इसका अर्थ ढूंढ़ने वाले के प्रयास विफल, भ्रमित और विकृत हो जाते हैं।

जैसे कि ''यूहन्ना ने बपतिस्मे की शिक्षा दी'' पाठ में बताया गया है (देखिए मत्ती 3:1-3; लूका 3:1-9; यूहन्ना 1:15-34), यूहन्ना की सेवकाई का उद्देश्य लोगों को आने वाले मसीह के लिए तैयार करना था (यूहन्ना 1:6-8)। इस तैयारी में (1) शीघ्र ही स्थापित होने वाले राज्य की घोषणा, (2) उस राजा अर्थात मसीह को स्वीकार करने के लिए लोगों को तैयार करना, (3) लोगों को मन फिराने के लिए प्रेरित करना और (4) प्रमाण के रूप में कि वे मन फिरा रहे हैं और मसीह में जो शीघ्र ही प्रकट होने वाला था विश्वास लाने को तैयार हैं उन्हें बपतिस्मे की वचनबद्धता में लाना शामिल था।

यीशु के बपतिस्मे का अभिप्राय तथा उद्देश्य

अभिप्राय तथा उद्देश्य भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। एक पिता की इच्छा हो सकती है कि उसका पुत्र नहा कर बालों को कंघी कर ले। इसके पीछे उसका *उद्देश्य* अपने पुत्र का सुन्दर दिखना हो सकता है, जबकि उसका *अभिप्राय* उस लड़की को आकर्षित करना हो सकता है जो उसे अपने लड़के के साथ विवाह के लिए पसन्द होगी। यहां अभिप्राय तथा उद्देश्य अलग-अलग होंगे।

बेशक स्पष्ट तौर पर तो नहीं कहा गया है, लेकिन निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यीशु को बपतिस्मा लेने की प्रेरणा परमेश्वर की आज्ञा मानने की इच्छा से मिली। यूहन्ना का बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले दूसरे सभी लोगों का यही अभिप्राय हो सकता है अर्थात परमेश्वर की आज्ञा मानना, परन्तु उनका उद्देश्य यीशु के उद्देश्य की तरह नहीं हो सकता।

वह *सब* धार्मिकता को पूरा करने के लिए यूहन्ना के पास आया था, जबकि वे अपने पापों की क्षमा से धर्मी बनने के लिए आए थे। यदि यीशु और यूहन्ना के अनुयायी एक ही उद्देश्य से उसके पास आए, तो यह निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए (1) कि यीशु एक पापी था जो अपने पापों से मन फिराकर, अपने पापों का अंगीकार करके और आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेने के लिए उनके पास आया ताकि वह अपने पापों की क्षमा पाकर धर्मी बन जाए या (2) यह कि बपतिस्मा लेने के लिए आने वाले का पाप बिना किसी दोष के होना आवश्यक है, क्योंकि बपतिस्मा लेने के समय यीशु पापरहित था। पहला निष्कर्ष यीशु को पापी बनाकर शास्त्र का खण्डन करता है (इब्रानियों 4:15)। दूसरा, शास्त्र की इस बात का खण्डन करता है कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए है (प्रेरितों 2:38; 22:16)।

यदि यीशु ने कहा होता कि उसे एक धार्मिकता की शर्त को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लेना है, तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि वह इसी कारण बपतिस्मा ले सकता था। परन्तु यीशु ने कहा कि उसने *सब* धार्मिकता को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लेना था। इसमें इसी कारण बपतिस्मा लेने की और कोई भी बात शामिल नहीं होती, क्योंकि किसी ने भी, यहां तक कि यूहन्ना ने भी जिसने माना कि उसे यीशु से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है (मत्ती 3:14) *सब* धार्मिकता को पूरा नहीं किया था (रोमियों 3:10)। यीशु इसका अपवाद था और *वह सब* धार्मिकता को पूरा करने के लिए बपतिस्मा ले सकता था।

बपतिस्मे का इन्कार करने वाले लोग यीशु द्वारा बपतिस्मा लेकर दी गई गवाही का भी इन्कार करते हैं, और वे परमेश्वर की *धार्मिकता* की शर्त का भी इन्कार करते हैं। बपतिस्मा निर्धनों की सहायता या भले काम करने जैसा मनुष्य के धर्म का काम नहीं है (तीतुस 3:5)। यह स्वर्ग से अर्थात परमेश्वर की ओर से है; इसलिए जब कोई इसे मान लेता है, तो वह धार्मिकता की परमेश्वर की शर्त को पूरा करता है। यह एक कारण है कि यीशु को भी बपतिस्मा लेने की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि परमेश्वर की *सब* धार्मिकता की शर्तों में बपतिस्मा शामिल था।

यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था

यूहन्ना से बपतिस्मा लेकर यीशु ने माना कि यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से था (लूका 20:1-8) अर्थात यूहन्ना को बपतिस्मा देने के लिए परमेश्वर ने ही भेजा था। महायाजकों व प्राचीनों के एक प्रश्न कि जो काम वह कर रहा था वे किस अधिकार से थे, का उत्तर देते हुए यीशु ने पूछा, ''यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से?'' (लूका 20:4)।

प्रश्न का उद्देश्य स्पष्ट है। यदि वे कहते कि यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से था, तो उन्हें यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर उसकी गवाही को मान लेना चाहिए था कि यीशु ही मसीह है। यूहन्ना के बपतिस्मे को मानने में उनकी असमर्थता से संकेत मिला कि उन्हें लगता था कि

यह बपतिस्मा मनुष्यों की ओर से है; इसलिए उन्होंने यीशु के बारे में उसकी गवाही नहीं मानी।

इन अगुओं ने यूहन्ना का बपतिस्मा न लेकर अपने लिए परमेश्वर की मंशा (परिकल्पित उद्देश्य) को ठुकरा दिया, जबकि उस बपतिस्मे को मानने वालों ने ''परमेश्वर को धर्मी ठहराया,'' अर्थात बपतिस्मा लेकर परमेश्वर के मार्ग को सही माना (लूका 7:30)।

इस संदर्भ में, यीशु बपतिस्मा लेने के लिए यूहन्ना के पास आया था। वह जानता था कि अपने से बड़े के विषय में यूहन्ना का संदेश (मरकुस 1:7) उसी की गवाही था। बपतिस्मा लेकर यीशु ने न केवल यूहन्ना के काम को मान्यता ही दी बल्कि उसने उसके संदेश की वैधता की गवाही भी दी। यदि यीशु यूहन्ना से बपतिस्मा लेने से इन्कार कर देता, तो वह यह संकेत देता कि यूहन्ना एक धोखेबाज और फरेबी था। उससे बपतिस्मा लेकर, यीशु ने सिद्ध किया कि यूहन्ना अपने बारे में सही कहता था (मत्ती 3:3; यूहन्ना 1:23) और उसके मसीह होने का यूहन्ना का संदेश सही था (यूहन्ना 1:15)।

यूहन्ना समझ गया कि उसका बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था, क्योंकि उसने कहा कि परमेश्वर ने उसे बपतिस्मा देने के लिए भेजा था और बपतिस्मा देने से ही मसीह उस पर प्रकट होना था (यूहन्ना 1:33, 34)। यीशु बपतिस्मा लेने के लिए न केवल यह संदेश देने आया कि यूहन्ना परमेश्वर की ओर से आया एक सच्चा नबी था बल्कि इसलिए भी आया ताकि वह यूहन्ना पर प्रकट हो जाए और फिर इस्राएल पर गवाही दे सके कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:31-33)। इस कारण बपतिस्मा लेने के लिए यीशु के आने को बहुत महत्व दिया जाना चाहिए।

यीशु ने इस्राएल पर प्रकट होने के लिए बपतिस्मा लिया था (यूहन्ना 1:31), परन्तु यीशु को बपतिस्मा लेते हुए कुछ ही लोगों ने देखा था। उसे बपतिस्मा लेते हुए देखने वालों में प्रमुख व्यक्ति यूहन्ना था। यह ज़रूरी था क्योंकि बपतिस्मा लेने के बाद जब पवित्र आत्मा यीशु पर उतरा, तो यूहन्ना ने परमेश्वर की साक्षी की गवाही दी कि यीशु ही मसीह है। यीशु के बपतिस्मे के समय तुरन्त कार्य करते हुए यीशु पर पवित्र आत्मा भेजकर परमेश्वर ने यूहन्ना को गवाही दी; इसका परिणाम यह हुआ कि यूहन्ना ने इस्राएल में गवाही दी कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:32-34)।

पानी के बपतिस्मे का महत्व

गवाही के रूप में, कि यीशु ही मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है (यूहन्ना 1:31-34) यीशु का यूहन्ना से बपतिस्मा करवाकर और बपतिस्मे के बाद यह कहकर कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं'' (मत्ती 3:17) निश्चय ही परमेश्वर ने पानी के बपतिस्मे के महत्व पर ज़ोर देना चाहा होगा। यीशु भी पानी के बपतिस्मे के महत्व पर ज़ोर देना चाहता होगा। पापरहित होने के बावजूद उसने बपतिस्मा लिया (इब्रानियों 4:15) और यूहन्ना के बपतिस्मे से जुड़ी पापों की क्षमा की उसे आवश्यकता नहीं थी।

यीशु, अपवाद

यीशु अपवाद था। यूहन्ना का बपतिस्मा लेने आने वाले सब लोगों को क्षमा की आवश्यकता थी; उनके लिए अपने पापों का अंगीकार करने और बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना आवश्यक था (मत्ती 3:7, 8)। उन्हें अपने जीवनों में कुछ निश्चित बदलाव लाने (लूका 3:10–14) और आने वाले मसीह पर विश्वास करने का निर्देश दिया गया था (प्रेरितों 19:4)। यूहन्ना के बपतिस्मे के साथ यीशु के लिए इनमें से कोई भी उद्देश्य प्रासंगिक नहीं होता था, परन्तु यूहन्ना के बपतिस्मे से जुड़ी अन्य मान्यताएं (राज्य का आना और मसीह का आना) उसके लिए प्रासंगिक हो सकती थीं। बेशक यूहन्ना के बपतिस्मे के सभी अर्थ तो यीशु के लिए प्रासंगिक नहीं थे, परन्तु कुछ थे; इसलिए यीशु ने यूहन्ना का बपतिस्मा लिया था।

यीशु के बपतिस्मे की तुलना एक महापौर के पुत्र के कामों से की जा सकती है जिसे मालूम था कि उसके पिता ने एक नियम बनाया है कि नगर की हर कार हर मंगलवार को धोई जाए। सोमवार शाम को उसके पुत्र ने एक नई कार खरीदी और उस पर कोई दाग या धूल का निशान नहीं था। महापौर के रूप में अपने पिता के आदेश का सम्मान करते हुए, पुत्र ने मंगलवार को अपनी कार धो दी, चाहे इसे धोने की आवश्यकता नहीं थी। ऐसा करके पुत्र ने न केवल अपने पिता के प्रति सम्मान दिखाया बल्कि अपने पिता के अधिकार और उसके द्वारा पास किए गए कानून का महत्व भी दिखाया। बेशक उसने अपनी कार धोई और दूसरे सब लोगों ने भी ऐसा ही किया था, परन्तु उसका उद्देश्य कार साफ करना नहीं बल्कि इससे अलग था। उसने अपने पिता के सम्मान के लिए ऐसा किया था। जबकि दूसरे लोग न केवल उसके पिता के सम्मान के लिए बल्कि नियम का पालन करने के लिए अपनी कारों को धोने के लिए ही आए थे। उसी प्रकार परमेश्वर के निष्कलंक पुत्र ने यूहन्ना के मिशन और उस बपतिस्मे की गवाही देने जिसकी उसके पिता ने यूहन्ना के द्वारा आज्ञा दी थी, अपने पिता के सम्मान में बपतिस्मा लिया था।

यीशु में कोई पाप नहीं था, इस कारण उसे पापों से क्षमा के लिए मन फिराने की भी कोई आवश्यकता नहीं थी। उद्धार पाने के लिए कुछ करने के लिए अर्थात परमेश्वर से सीखने (यूहन्ना 6:45), विश्वास करने (यूहन्ना 3:16), मन फिराने (प्रेरितों 17:30), अंगीकार करने (रोमियों 10:10) और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 22:16; 1 पतरस 3:21) में वह मनुष्य का उदाहरण नहीं हो सकता था। ये सब काम पापियों के करने के लिए हैं, निर्दोषों के लिए नहीं, निर्दोष चाहे बच्चे हों या परमेश्वर का निष्कलंक पुत्र। यदि हमारे करने के लिए सब कामों में यीशु हमारा उदाहरण है, तो हमें ऊपर लिखे कामों को करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उसने इनमें से एक भी बात को पूरा नहीं किया। लेकिन हम पापी हैं और हमारे लिए अपने पापों की क्षमा के लिए वे काम करने आवश्यक हैं जो उसने नहीं किए। यदि हमें वह करने की आवश्यकता नहीं जो उसने किया, तो पापों से क्षमा पाने के लिए जो कुछ हमें करने की आवश्यकता है, उसमें वह हमारा उदाहरण नहीं हो सकता।

कुछ लोग बच्चों को बपतिस्मा देने के लिए बारह वर्ष की आयु ठहराते हैं क्योंकि इस आयु में यीशु मन्दिर में शिक्षा देने लगा था। ऐलन ने इस प्रकार से लिखा था, ''सच्चाई यह है कि वह सब बातों में हमारा उदाहरण है।''[4] यदि यीशु सब बातों में हमारे लिए आदर्श है, तो बच्चों को बारह वर्ष की आयु में परमेश्वर के लिए सेवा करने की इच्छा करके और तीस वर्ष की आयु में बपतिस्मा लेकर (लूका 3:21-23) परमेश्वर की सेवा आरम्भ कर देनी चाहिए। यदि उसका वह कार्य केवल परमेश्वर की आज्ञाकारिता का उदाहरण था, तो क्या बपतिस्मा लेने और परमेश्वर की सेवकाई आरम्भ करने के लिए तीस वर्ष की आयु एक नमूना नहीं है?

सारांश

बपतिस्मा लेकर यीशु ने यूहन्ना पर अपने मसीह होने को प्रकट किया और प्रमाणित किया कि यूहन्ना परमेश्वर का एक सच्चा नबी था। यीशु ने परमेश्वर की धार्मिकता की *सब* शर्तों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ते हुए धार्मिकता के इस कार्य को पूरा किया, यह ऐसा कार्य था जिसे कोई दूसरा आदमी नहीं कर सकता था। केवल यीशु ही इस प्रकार से जीया कि *सब* धार्मिकता को पूरा करे, जबकि मनुष्य पापी होने के कारण धार्मिकता से वंचित है, उसे धर्मी बनने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है। यीशु का बपतिस्मा आज्ञाकारिता का एक उदाहरण है, उद्धार और पापों की क्षमा पाने का नहीं ।

बेशक यूहन्ना के बपतिस्मे में शामिल सभी बातें यीशु के लिए प्रासंगिक *नहीं* थीं, लेकिन यूहन्ना के बपतिस्मे में आज्ञाकारिता का सिद्धांत यीशु के लिए प्रासंगिक था। इसलिए, यीशु ने उन बातों को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लिया जो उसके लिए प्रासंगिक थीं और इस प्रकार वह परमेश्वर की धार्मिकता की सभी शर्तों को पूरा करने के लिए प्रयास करता रहा।

पाद टिप्पणियां

[1]*लेट योअर किंगडम कम* (n.p.: वाचटॉवर बाइबल एण्ड ट्रैक्ट सोसायटी ऑफ़ पिनसेलवेनिया, 1981), 69. [2]जिम्मी ऐलन, *रीबैप्टिज़्म?* (वेस्ट मोनरो, ला.: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1991), 46. [3]वहीं, 48. [4]वहीं।